

THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE

TOPIC : वैदिक व्याकरण

हिंदी

SUBMITTED TO
D.R SURESH RATHOD
ASSOCIATE PROFESSOR
DEPARTMENT OF LANGUAGE

SUBMITTED BY
HABEEBA P.H
BSC (BCGAMB)
REG.NO : 19RN385137

वैश्विक तापमान

धरती के ताप का बढ़ना पूरी दुनिया के लिये चिंताजनक एवं चिंतनीय विषय है।

वैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने अपने नवीनतम अध्ययनों में पाया है कि १९५० के दशकों के तापदोड़ उत्सर्जन पर प्रभावी रोक नहीं लगा पाने के कारण ग्लोबल वार्मिंग की विख्याती समस्या और गंभीर होने लगी है। और इससे कई बीमारियों तथा अन्य पर्यावरणीय संकट के फैलने का अंतर बढ़ गया है। वास्तव में आज संपूर्ण विश्व के आम जनसंख्या अधिक शारीरिक पंचांगों से अधिक बड़ा संकट वैश्विक तपस्व के कारण २१ वीं शताब्दी में लड़ चलने, विनाशकारी

मौसम और उपग्रहबन्धीय बीमारियों में बढ़ोतरी के कारण अनेक

लोग मृत्यु की थपेट में आयेगा।
अमरीकन स्तर में वृद्धि हो रही है, बाढ़
व सूखे की आवृत्ति बढ़ रही है, स्वाभाविक
में विलोपन आ रही है, तथा प्रति 10 वर्ष
में लगभग 2.43 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि
वस्तुओं के अस्तित्व को जीतने का कारण
बनी हुई है।

पृथ्वी के स्तर पर औसतन तापमान
का बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है।

औद्योगिकीकरण में हरिन हाउस गैसों का
अनियंत्रित उत्सर्जन तथा जीवाश्म ईंधन
का जलना ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य
कारण है।

कारण

जहाँ विश्व में ताक और अन्य तकनीकी
औद्योगिक गतिविधियाँ बढ़ रही हैं जो
मनुष्य के विकास की शुचक हैं वही
दूसरी तरफ ग्लोबल वाणिज्य की गतिविधि
भी बढ़ रही हैं जो आती मात्रता के
लिए धातक सिद्ध हो सकती हैं। विश्व भर
के पर्यावरणविद अनेक समय से चिन्तित हैं
कि कार्बन डाई ऑक्साइड तथा फ्लोरो
कार्बन समूह की गैसों के निरंतर उत्सर्जन
से, ग्लोबल वार्मिंग के चलते
दैनिक - दिन धरती का तापमान बढ़ता
जा रहा है। पृथ्वी के वायुमंडल में
अनगिनत गैसों के दहन पर क्रियात्मक
रूप से चलते रहे हैं। इन गैसों

में कार्बन होते हैं। इन लोगों में कार्बन
डाई आक्साइड, ओजोन, नाइट्रस आक्साइड,
मीथेन आदि होते हैं। सूर्य की किरण,
ओजोन मंडल में बड़ी ओजोन पट्टिका
से छनकर अण्डा मिलती है तथा पृथ्वी
से अनावश्यक अण्डा का परापन भी
इसी प्राकृतिक कार्य का महत्वपूर्ण अंग
है। कृत्रिम हाउस वॉर्मिंग के असंतुलित होने
के कारण पृथ्वी की गर्मी बाहर नहीं जा
पाती है और इस प्रकार (विश्वव्यापी)
तापमान में वृद्धि होती है।

ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण
प्रदूषण है। उसके प्रकार बताना व्यर्थ
है।

दुष्प्रभाव

पृथ्वी पर बढ़ते तापमान से अतिवृष्टि के अलावा समुद्र की जल सतही बढ़ने लगती है। बर्फ का पिघलना और समुद्र के जलस्तर का ऊपर आना पृथ्वी के जलमण्डल हो जाने की संभावना को बढ़ाता है। पिछले 5 वर्षों से पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो अब 200 तक समुद्र का जलस्तर एक मीटर तक वृद्धि कर सकता है। वैज्ञानिकों का यह भी निष्कर्ष है कि वायुमंडल में तापमान वृद्धि के कारण पृथ्वी की अपनी कुरी पर धूमने की स्फटार भी काम होती जा रही है।

निष्कर्ष

अब 1959 में अमेरिका के वैज्ञानिक
लॉरी शेन कार्बन डाइऑक्साइड व
क्लोरो फ्लोरो कार्बन गैसों के पर्यावरण
पर पड़ते असर को रेखांकित किया।
लेकिन दोस आंकड़ों का अभाव
बताकर विकसित देशों ने स्थिति की
गंभीरता स्वीकारना उचित नहीं समझा।
यह समस्या अब 1974 में कार्बनडाई
ऑक्साइड व तापमान वृद्धि के संबंधों का
दृष्टि द्वां कंप्यूटर मॉडलों व तत्संबन्धी
अनुसंधानों के माध्यम से अनुमानों की
गहरी और तब नहीं जाकर विकसित
देश कुछ अचोट हुए और उनके
पांच वर्ष बाद 1979 में जेनेवा में
प्रथम जलवायु सम्मेलन में समस्या
जी।

लाभ

कार्बन डाइऑक्साइड कि ज्यादा मात्रा से यह जाना गया है की पौधे और अच्छी तरह से उगते हैं। और प्रायः का भी आवासन कम रहता है। ठण्ड में मौसम में पौधों को आने के लिए अक्सर ग्रीन हाउस से घिय होता है। ग्लास का यह पैनल सूर्य के किरणों को अन्दर आने तो देता है मगर अन्दर जो ताप उत्पन्न होता है उसे बाहर जाने नहीं देता। इससे यह ग्रीन हाउस अन्दर से ठीक इसी तरह गर्म हो जाता है जैसे बहुत देर तक धूप में खड़ी गाड़ी अन्दर से गर्म हो जाती है।

निष्कर्ष

दलीबल वार्मिंग निक और बढ़ती आधुनिक
तकनीक और आधिकांशिक व्यापार बढ़ाने के
लिये आधिकांशिक उत्पादन करने में विश्व
संगठनों के उत्पादिक दोहन का प्रवृत्ति है।
वही दुजरी और न केवल मानवता का
बलकी पूरी वस्तुता को समुद्र में इसके न
बेचाये रखने की चुनौती है। इसके निम्न
हमें आधुनिक तकनीक, उत्पादन प्रक्रिया और
व्यापारिक वृत्ति पर इस तरह न
पुनर्विचार करना होगा कि आज का
मानुष्य अपने तकनीकी संभव को भी बड़ा
रखे और जीवन भी रह सके।